तृतीय भाषा हिंदी

हिंदी वल्लरी – 10 वीं कक्षा

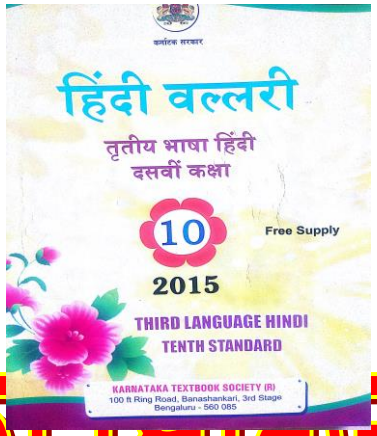

सफलता का क्षितिज

॥'सफलता का क्षितिज' का अनुकरण कर सफलता का आसमां-क्षितिज छू लो॥
'ಸಫಲತಾ ಕಾ ಕ್ಷಿತಿಜ' ನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಯಶಸ್ಸಿನ ಆಕಾಶನ್ನು ಗಳಿಸಿ
उत्तम परिणाम के लिए 2015-16 के नील नक्षा के अनुसार प्रश्नोत्तर मालिका
ಉತ್ತಮ ಫಲಿತಾಂಶಕ್ಕಾಗಿ 2015-16 ನೇ ಸಾಲಿನ ನೀಲ ನಕ್ಷೆಯ ಅನುಸಾರ ಪ್ರಶ್ನೋತ್ತರ ಮಾಲಿಕೆ

संकलनकर्ता :- **डॉ. सुनील परीट**

M.A.,M.Phil.,Ph.D.,B.Ed.,PGDT.

- **<u>ಸೂಚನೆಗಳು :-</u>**

=ಈ ಹೊತ್ತಿಗೆಯ ಅನುಸಾರ ಸಂಪೂರ್ಣ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಗಳಿಸಲು ವಿಷಯ ಶಿಕ್ಷಕರ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಅತ್ಯವಶ್ಯಕ.
=ಇದನ್ನು ಓದಿ-ಮನನ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಇದು ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕಲಿಯುವವರಿಗೆ ಹಾಗೂ ಉತ್ತಮ ಸಾಧನೆಗೈಯುವವರಿಗೆ ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ.
=ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರಿಸುವ ಮುನ್ನ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು.
=ಸಾಧ್ಯವಾದಷ್ಟು ಉತ್ತರಗಳನ್ನು point to point ಬರೆಯಬೇಕು. ಹಾಗೂ ಉತ್ತರಗಳು ಅಂಕಗಳಿಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ =ಸ್ಪಷ್ಟ,ವಸ್ತುನಿಷ್ಠವಾಗಿರಲಿ. ಯಾವುದೇ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರಿಸದೆ ಖಾಲಿಬಿಡಬಾರದು.
=ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕ ಓದಿ, ಪುನರಾವಲೋಕನಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚು ಒತ್ತು ನೀಡುವುದು.
=ಇದು ಕೇವಲ ಕಲಿಕಾ ಸಹಾಯಕವಷ್ಟೆ ಹೊರತು ನಕಲು ಸಾಮಗ್ರಿವಲ್ಲ.

- ಡಾ।। ಸುನೀಲ ಪರೀಟ
ಹಿಂದಿ ಶಿಕ್ಷಕರು ಹಾಗೂ ಸಾಹಿತಿಗಳು
ಸರಕಾರಿ ಪ್ರೌಡಶಾಲೆ, ಲಕ್ಕುಂಡಿ – 591102
ತಾ।। ಬೈಲಹೊಂಗಲ, ಜಿ।। ಬೆಳಗಾವಿ ಮೊ. 9480006858

नीला नक्शा

समय : 2½ घंटे | दसवीं कक्षा तृतीय भाषा हिन्दी [61 H] | अंक : 80

X Standard Third Language Hindi [61 H]

विषय-वस्तु	स्मरण रखना					समझना					अभिव्यक्ति					रसग्रहण					कुल प्रश्न	कुल अंक
	व.नि.	अ.ल.	ल. उ.		दी. उ.	व.नि.	अ.ल.	ल. उ.		दी. उ.	व.नि.	अ.ल.	ल. उ.		दी. उ.	व.नि.	अ.ल.	ल. उ.		दी. उ.		
	1अंक	1अंक	2अंक	3अंक	4अंक	1अंक	1अंक	2अंक	3अंक	4अंक	1अंक	1अंक	2अंक	3अंक	4अंक	1अंक	1अंक	2अंक	3अंक	4अंक		
गद्य भाग :-																						
1. रवींद्रनाथ ठाकुर		(1) 1						(1) 2													2	3
2. भक्तों के भगवान														(1) 3							1	3
3. इंटरव्यू ग्रामीण							(1) 1	(1) 2													2	3
4. गिल्लू						(1)1 *		(1) 2													2	3
5. बसंत की सच्चाई															(1) 4						1	4
6. कर्नाटक संपदा			(1) 2			(1)1 *															2	3
7. आत्मकथा	(1)1 #							(1) 2													2	3
8. ईमानदारों के सम्मेलन में	(1)1 *					(1)1 #	(1) 1														3	3
9. वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का							(1) 1							(1) 3							2	4
10. साहित्य सागर का मोती						(1)1 #		(1) 2													2	3
पद्य भाग :-																						
11. प्रभो					(1) 4																1	4
12. मातृभूमि							(1)							(1)							2	4

							1							3								
13. अभिनव मनुष्य	(1)1 #	(1) 1						(1) 2													3	4
14. तुलसी के दोहे			(1) 2																(1) 3		2	5
15. सूर-श्याम						(1)1 *		(1) 2													2	3
पूरक वाचन भाग :-																						
16. शनि : सबसे सुंदर ग्रह								(1) 2													1	2
17. सत्य की महिमा																						
18. अनमोल समय								(1) 2													1	2
व्याकरण भाग :-																						
व्याकरण	(3)3					(5)5															8	8
रचना भाग :-																						
अपठित गद्यांश															(1) 4						1	4
अनुवाद												(4) 4									4	4
पत्र लेखन															(1) 4						1	4
निबंध रचना															(1) 4						1	4
कुल योग	(11)16					(23)32					(11)25					(1)3					46	80

सूचना :- १. कोष्ठक के अंदर प्रश्नों की संख्या और बाहर अंक इंगित हैं ।

२. # चिन्ह और * चिन्ह अनुक्रम से अनुरूपता और जोड़कर लिखने के प्रश्न के संकेत हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ	लेखक	विधा	पृ
1.	प्रभो !	जयशंकर प्रसाद	कविता (कंठस्थ)	
2.	रवींद्रनाथ ठाकुर	संकलित	जीवनी	
3.	भक्तों के भगवान	संकलित	कहानी	
4.	इंटरनेट क्रांति	संकलित	संवाद	
5.	मातृभूमि	भगवतीचरण वर्मा	कविता (कंठस्थ)	
6.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	रेखाचित्र	
7.	बसंत की सच्चाई	विष्णु प्रभाकर	एकांकी	
8.	कर्नाटक-संपदा	संकलित	निबंध	
9.	आत्मकथा	भीष्म साहनी	आत्मकथांश	
10.	ईमानदारों के सम्मेलन में	हरिशंकर परसाई	व्यंग्य रचना	
11.	अभिनव मनुष्य	रामधारीसिंह 'दिनकर'	कविता	
12.	वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का	संकलित	व्यक्ति परिचय	
13.	तुलसी के दोहे	तुलसीदास	दोहा	1
14.	सूर-श्याम	सूरदास	पद	1
15.	साहित्य सागर का मोती	संकलित	साक्षात्कार	1

दसवीं कक्षा तृतीय भाषा हिंदी [61 H]
X Standard Third Language Hindi [61 H]
आधार-पत्रक के लिए प्रश्न-पत्र का अभिकल्प
Question Paper Design for Blue Print

उद्देश्यों की दृष्टि से अंकभार – Weightage to Objectives:–

उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
स्मरण रखना	16	20%
समझना	32	40%
अभिव्यक्ति	29	36%
रसग्रहण	03	4%
कुल	80	100%

विषय-वस्तु की दृष्टि से अंकभार – Weightage to Contents:–

विषय-वस्तु	अंक	प्रतिशत
गद्य	32	40%
पद्य	20	25%
व्याकरण	08	10%
रचना	16	20%
पूरक वाचन	04	05%
कुल	80	100%

प्रश्न-प्रकार की दृष्टि से अंकभार – Weightage to Types of Question:–

प्रश्न-प्रकार		प्रश्नों की संख्य	अंक	प्रतिशत
वस्तुनिष्ठ	1. बहुविकल्पीय	08	08	10%
	2. अनुरूपता	04	04	05%
	3. जोड़कर लिखना	04	04	05%
अति लघूत्तर		14	14	17.5%
लघूत्तर	1. दो अंकवाले	11	22	27.5%
	2. तीन अंकवाले	04	12	15%
दीर्घोत्तर		04	16	20%
कुल		49	80	100%

कठिनता की स्तर की दृष्टि से अंकभार – Weightage to Difficulty Level:–

कठिनता की स्तर	अंक	प्रतिशत
सरल	24	30%
सामान्य	40	50%
कठिन	16	20%
कुल	80	100%

* जोडकर और अनुरुपकता के अनुसार लिखिए

* गिल्लू :- (जोडकर)

गिल्लू पाठ – रेखाचित्र
गिल्लू पाठ की लेखिका – महादेवी वर्मा
आधुनिक मीरा – महादेवी वर्मा
महादेवी वर्मा – ज्ञानपीठ पुरस्कार – 1982 – यामा को
गिल्लू यानी – गिलहरी
गिल्लू का प्रिय खाद्य – काजू
गिलहरी की – चमकीली आँखें
गिलहरी की जीवन अवधि – दो वर्ष

• कर्नाटक संपदा :- (जोडकर)

कर्नाटक संपदा पाठ – निबंध
कर्नाटक के पश्चिम में – अरबी समुद्र
कर्नाटक – चंदन का आगार
कर्नाटक के दक्षिण से उत्तर की छोर तक – पश्चिमी घाट
कर्नाटक के दक्षिण में – नीलगिरी पर्वत
कर्नाटक की राजधानी – बेंगलूरु
सिलीकान सिटी – बेंगलूरु
डॉ. सी.एन.आर. राव – भारत रत्न – 2013
श्रवणबेलगोल – गोमटेश्वर (बाहुबली) की प्रतिमा – 57 फूट
बसवण्णा – क्रन्तिकारी समाज सुधारक
गोलगुंबज में – वास्तुकाला
बेलूर के शिल्पों में – शिल्पकला

• आत्मकथा :- (अनुरुपता)

आत्मकथा – आत्मकथांश
आत्मकथा पाठ के लेखक – भिष्म साहनी
रेस्तराँ का मालिक – चीनी
साहनी अध्यापन के साथ-साथ – कपडे का व्यापार
साहनी जी को प्रेरणा मिली – अंग्रेजी अध्यापक से
साहनी ने गांधीजी को देखा – सेवाग्राम में
साहनी ने खादी का कुर्ता पहना – विद्रोह के लिए
साहनी की बुआ की बेटी – श्रीमती सत्यवती मलिक
साहनी जी की घर का वातावरण – साहित्यिक
भाग्यरेखा – भीष्म साहनी

• ईमानदारों के सम्मेलन में :- (जोडकर) + (अनुरुपता)

ईमानदारों के सम्मेलन में पाठ के लेखक – हरिशंकर परसाई
ईमानदारों के सम्मेलन में की विधा – व्यंग्य
देश के प्रसिध्द ईमानदार – लेखक (हरिशंकर परसाई)

सम्मेलन के उद्घाटक, मुख्य अतिथि - लेखक (हरिशंकर परसाई)
हिंदी के व्यंग्य साहित्यकार - हरिशंकर परसाई
होटेल के कमरे में - तिस-पैंतीस प्रतिनिधि
ब्रीफकेस में - कागजात थे
तीसरे दिन - कंबल गायब
पहले दिन - लेखक की चप्पले गायब
लेखक की चप्पलें - ईमानदार डेलिगेट ने पहनी थी
पहनने के कपडे - सिरहाने दबाकर सोये
सम्मेलन का उद्घाटन - शानदार हुआ
धूप का चश्मा - कमरे के टेबुल पर

- **साहित्य सागर का मोती :- (अनुरुपता)**

साहित्य सागर का मोती एक - साक्षात्कार है
डॉ. चंद्रशेखर कंबार - ज्ञानपीठ पुरस्कार - 2010 - समग्र साहित्य
जन्म - घोडगेरी (हुक्केरी बेलगांव)
घोडगेरी - घटप्रभा नदी के तट पर
कंबार की शिक्षा - एम.ए., पी.एच.डी. - कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड
लोकसाहित्य में रुचि - पौराणिक प्रसंगों को सुनकर प्रोफेसर - दो वर्ष - अमेरीका के शिकागो विश्वविद्यालय
संस्थापक/उपकुलपति - कन्नड विश्वविद्यालय हंपी
हिन्दी हमारी - राष्ट्रभाषा है
आपसी व्यवहार के लिए - हिंदी सीखना जरूरी है

- **अभिनव मनुष्य :- (अनुरुपता)**

अभिनव मनुष्य कविता के कवि - रामधारीसिंह दिनकर
रामधारीसिंह दिनकर - ज्ञानपीठ पुरस्कार - 1972 - उर्वशी को
आधार ग्रंथ - कुरुक्षेत्र का षष्ठ सर्ग
आधुनिक मनुष्य - प्रकृति पर विजय
मनुष्य की साधना का वर्णन - अभिनव मनुष्य

- **सूरश्याम :- (जोडकर)**

सूरश्याम कविता के कवि - सूरदास
सूरदास - हिंदी साहित्याकाश के सूर्य
यशोदा - कृष्ण की माता
नंद - कृष्ण के पिता
यशोदा-नंद - गोरे
कृष्ण - काला, स्याम
बलराम - कृष्ण के भैया
चुटकी दे-देकर - ग्वाल हंसते

* एक अंकवाले प्रश्न *

* पाठ :- रवींद्रनाथ ठाकुर

१. रवीन्द्रनाथ जी ने 'सर' की उपाधि क्यों त्याग दी ?
उत्तर:- रवीन्द्र जी को 1913 में 'सर' की उपाधि दी गई पर जलियाँवाला बाग के अमानुषिक हत्याकाण्ड के पश्चात रवीन्द्र जी ने 'सर' की उपाधि का त्याग कर दिया।

२. रवींद्रनाथ जी की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं ?
उत्तर:- रवीन्द्र जी की प्रमुख रचनाएँ- गीतांजलि, गार्डनर, क्रेसेंट मून, किंग तथा डार्क चेंबर, फ्रूट गैदरिंग, तेरी स्मृतियाँ, राष्ट्रीयता, घरे बाहरे, गोरा, शेष कविता, मानव धर्म आदि रचनाएँ बहुत सुन्दर हैं।

३. रवींद्र जी ने किन-किन विषयों पर लेख लिखे हैं ?
उत्तर:- रवींद्र जी ने राजनीति, शिक्षा, धर्म, कला आदि विषयों पर लेख लिखे हैं ।

* पाठ :- इंटरनेट क्रान्ति

१.इंटरनेट क्रान्ति का असर किस पर पडा है ?
उत्तर :- इंटरनेट क्रान्ति का असर बडे-बूढों से लेकर छोटे बच्चों पर पडा है ।

२. ई-गवर्नेंस क्या है ?
उत्तर :- उत्तर :- ई-गवर्नेन्स द्वारा सरकार के सभी कामकाज का विवरन, अभिलेख, सरकारी आदेश आदि को यथावत लोगों को सूचित किया जाता है । इससे प्रशासन पारदर्शी बन जाता है ।

* पाठ :- वृक्षप्रेमी तिम्मक्का

१. पर्यावरण संरक्षण के साथ तिम्मक्का और कौन सा काम कर रही है ?
उत्तर :- पर्यावरण संरक्षण के साथ तिम्मक्का और अन्य सामाजिक काम भी कर रही है ।

२. तिम्मक्का दीन-दलितों की सेवा के लिए क्या समर्पित कर रही है ?
उत्तर:- तिम्मक्का दीन-दलितों की सेवा के लिए पुरस्कार के रुप में आयी धनराशि को समर्पित कर रही है।

३. कर्नाटक सरकार ने क्या बीडा उठाया है ?
उत्तर :- तिम्मक्का ने अब तक 300 से अधिक पेड लगाये हैं । कर्नाटक सरकार ने उन पेडों की रक्षा करने का बीडा उठाया है ।

४. तिम्मक्का ने क्या संकल्प किया है ?
उत्तर :- अपने पति की याद में तिम्मक्का ने हुलिकल ग्राम में गरीबों की नि:शुल्क चिकित्सा के लिए एक अस्पताल के निर्माण करने का संकल्प किया है ।

* पाठ :- ईमानदारों के सम्मेलन

१ सम्मेलन में लेखक के भाग लेने से किन-किन को प्रेरणा मिल सकती थी ?

उत्तर :- सम्मेलन में लेखक के भाग लेने से ईमानदारों तथा उदीयमान ईमानदारों को प्रेरणा मिल सकती थी ।

२. फूल मालाएँ मिलने पर लेखक क्या सोचने लगे ?

उत्तर :- फूल मालाएँ मिलने पर लेखक सोचने लगे कि- आस-पास कोई माली होता तो फूल-मालाएँ भी बेच लेता ।

३. लेखक पहनने के कपडे सिरहाने दबाकर क्यों सोये?

उत्तर:- होटेल के कमरे में बहुत सारी चोरियाँ हो रही थीं, इसलिए लेखक पहनने के कपडे सिरहाने दबाकर सोये ।

* पद्य :- अभिनव मनुष्य

१. आधुनिक पुरुष ने किस पर विजय पायी है ?

उत्तर :- आधुनिक पुरुष ने प्रकृति पर विजय पायी है ।

२. नर किन-किन को एक समान लाँघ सकता है ?

उत्तर :- नर नदी, पर्वत, समुद्र को एक समान लाँघ सकता है ।

* पद्य :- मातृभूमि

१. 'मातृभूमि' कविता के कवि कौन है?

उत्तर :- 'मातृभूमि' कविता के कवि भगवतीचरण वर्मा हैं।

२. जग के रुप को बदलने के लिए कवि किससे निवेदन करते हैं ?

उत्तर :- जग के रुप को बदलने के लिए कवि मातृभूमि (भारतमाता) से निवेदन करते हैं ।

• दो अंकोवाले प्रश्न *

* पाठ:- कर्नाटक संपदा

१.कर्नाटक की प्रमुख नदियाँ और जलप्रपात कौन-कौन से हैं ?

उत्तर :- कर्नाटक की प्रमुख नदियाँ- कावेरी, कृष्णा, भद्रावती आदि । कर्नाटक की प्रमुख जलप्रपात- जोग, अब्बी, गोकाक, शिवन समुद्र आदि ।

२. बाँध और जलाशयों के क्या उपयोग हैं ?

उत्तर :- बाँध और जलाशयों के उपयोग - १.इनसे से हजारों एकड जमीन सींची जाती है । २.इनकी सहायता से ऊर्जा-उत्पादन केंद्र भी स्थाअपित किये गये हैं ।

३. कर्नाटक के कुछ राजवंशों के नाम लिखिए ।

उत्तर :- कर्नाटक के कुछ राजवंशों के नाम- गंग, कदंब, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल, ओडेयर आदि ।

* पाठ :- तुलसी के दोहे

१. मनुष्य को हंस की तरह क्या करना चाहिए ?

उत्तर :- तुलसीदास जी ने साधु को हंस से तुलना करते हैं । मनुष्य को भी हंस तरह श्वेत सत्य-निष्ठा व पालन-पोषण करें । हंस का गुण दूध जैसा है, जो पानी से सब विकार त्याग देता है।

२. मनुष्य के जीवन में चारों ओर प्रकाश कौन फैलता है ?

उत्तर :- जिस तरह एक दीप पूरे घर-आँगन को प्रकाशमय करता है, उसी तरह मनुष्य के जीवन में चारों ओर प्रकाश राम नाम जपने से फैलता है ।

* पाठ :- रवींद्रनाथ ठाकुर

१. शांतिनिकेतेन का आशय क्या था ?

उत्तर:- शांतिनिकेतेन का आशय यह था कि औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ युवक-युवतियों की प्रतिभा तथा कौशल की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक मंच का निर्माण हो ।

२.शिक्षा-क्षेत्र को रवीन्द्र जी की देन क्या है?

उत्तर:- लोगों को उत्तम शिक्षा देने के लिए शान्ति निकेतन की स्थापना की। 'शान्ति-निकेतन' आज कला संगीत, नृत्य, चित्रकला के परिष्कृत अध्ययन-अध्यापन के लिए एक आदर्श विश्वविद्यालय के रुप में प्रसिद्ध है।

३. गीतांजलि के बारे में लिखिए।

उत्तर :- गीतांजलि के बारे में -

१.रवींद्र जी ने गीतांजलि का सन 1912 में अंग्रेजी में अनुवाद किया।

२.सन 1913 में इस कृति को 'नोबल पुरस्कार' मिला।

३.गीतांजलि के एक-एक गीत भावों से परिपूर्ण और संगीत की माधुरी से संसिक्त हैं।

* पाठ :- इंटरनेट क्रान्ति

१.संचार व सूचना के क्षेत्र में इंटरनेट का क्या महत्व है ?

उत्तर :- इंटरनेट से दूर रहते रिश्तेदार या दोस्तों को पल भर में, बिना ज्यादा खर्च किए कोई भी विचार हो, स्थिर चित्र हो, वीडिओ चित्र हो, दुनिया के किसी कोने में भेजना मुमकिन हो गया है । इस तरह संचार और सूचना क्षेत्र में इंटरनेट का बहुत ही महत्व है ।

२. इंटरनेट से कौन सी हानियाँ हो सकती हैं ?

उत्तर :- इंटरनेट की कुछ हानियाँ भी हैं -

१.इंटरनेट की वजह से पैरसी, बैंकिंग फ्रॉड, हैकिंग (सूचना/खबरों की चोरी) आदि बढ रही हैं ।

२. मुक्त वेब साइट, चैटिंग आदि से युवा पीढी ही नहीं बच्चे भी इंटरनेट की कबंध बाँहों के पाश में फँसे हुए हैं ।

३. इससे वक्त का दुरुपयोग, अनुपयुक्त और अनावश्यक जानकारी हासिल कर रहे हैं ।

३. व्यापार और बैंकिंग में क्या मदद मिलती है ?

उत्तर :- इंटरनेट द्वारा घर बैठे-बैठे खरीददारी कर सकते हैं । कोई भी बिल भर सकते हैं । इंटरनेट बैंकिंग द्वारा दुनिया की किसी भी जगह पर चाहे जितनी भी रकम भेजा जा सकता है ।

* पाठ :- गिल्लू

१.महादेवी वर्मा जी ने गिलहरी को क्या-क्या सिखाया ?

उत्तर :- लेखिका ने गिलहरी को अनेक बातें सिखायी है, खिडकी की खुली जाली की राह बाहर चला जाता है और गिलहरियों के साथ खेल-कूदकर ठीक चार बजे खिडकी से भीतर आता है । भोजन के समय थाली के पास बैठना सिखाया, वहीं बैठकर बडी सफाई से एक-एक चावल खाता रहता । गर्मियों में लेखिका के पास रखी सुराही पर चुपचाप लेट जाता ।

२. महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू कहाँ-कहाँ छिप जाता था ?

उत्तर :- महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे के चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में ।

३. गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता का वर्णन कीजिए ।

उत्तर :- एक दिन महादेवी वर्मा जी ने देखा कि गमले के पास गिलहरी का एक छोटा बच्चा घोसले से नीचे गिर पडा है । हौले से उसे उठाकर अपने कमरे में ले आयी फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया । उसे गिल्लू कहकर पोकारने लगे । एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिडकी पर लटका दिया । उसे खाने में स्वादिष्ट काजू और बिस्कुट देती । गिलहरियों के साथ खेलने के लिए बाहर छोडती । खाने के समय अपने साथ अपने थाली में उसे भी खिलाती । गर्मियों में महादेवी वर्मा जी के पास सुराही पर ही लेट जाता । पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि लेखिका ने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया । दो साल बाद गिल्लू चिर निद्रा में सो गया, सोनजुही की लता के नीचे ही उसकी समाधि बनाई गयी । उसकी मृत्यु से महादेवी वर्मा जी को बहुत दुख हुआ । ऐसी थी गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता ।

* पाठ :- आत्मकथा

१. अंग्रेजी अध्यापक से भीष्म साहनी को कैसी प्रेरणा मिली ?

उत्तर :- अंग्रेजी अध्यापक ने इस दकियानूसी, संकीर्ण, घुटन भरे वातावरण में से भीष्म साहनी को खींचकर बाहर निकाल लिया । उनकी प्रेरणा से ही भीष्म साहनी कलम आजमाई करने लगे ।

२. साहनी जी ने किस उद्देश्य से खादी पहनना शुरु किया ?

उत्तर :- साहनी जी ने इस उद्देश्य से खादी पहनना शुरु किया कि- खादी-पाजामा पहनकर सडकों पर घूमते, अंदर ही अंदर इस उम्मीद से कि पुलिसवाले इसको विद्रोह मानकर साहनी जी को गिरफ्तार कर लेंगे ।

३. साहित्य के संबंध में साहनी जी का राय क्या ?

उत्तर :- साहित्य के संबंध में साहनी जी का राय कि- अपने से अलग साहित्य नाम की चीज भी नहीं होती । जैसे मैं हूँ, वैसे ही मैं रचनाएँ भी रच पाऊँगा । मेरे संस्कार, अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं ।

* पाठ :- साहित्य सागर का मोती

१. डॉ. कंबार जी को लोक साहित्य में रुचि कैसे उत्पन्न हुई ?

उत्तर :- डॉ. कंबार जी शुरु से ही पौराणिक प्रसंगों को मन लगाकर सुनते थे । सामान्य जनता के जीवन में उनको अधिक दिलचस्पी थी । लिखने लगे । और इस तरह डॉ. कंबार जी को लोक साहित्य में रुचि उत्पन्न हुई ।

२. डॉ. कंबार जी को प्राप्त किन्हीं चार पुरस्कारों के नाम लिखिए ।

उत्तर :- डॉ. कंबार जी को प्राप्त चार पुरस्कार कर्नाटक राज्योस्तव, कर्नाटक नाटक अकादमी, पंप प्रशस्ति, पद्मश्री, मास्ती प्रशस्ति, कबीर सम्मान. भारत सरकार द्वारा 'संगीत अकादमी फेलोशिप' तथ ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि ।

३. राष्ट्रभाषा हिन्दी के बारे में डॉ. कंबार जी के क्या विचार हैं ?

उत्तर :- राष्ट्रभाषा हिन्दी के बारे में डॉ. कंबार जी के विचार - ' हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है । राष्ट्र में एकता लाने के लिए हिन्दी भाषा अत्यंत उपयोगी है । आजका यह संपर्क भाषा के रुप में प्रचलित है । हमें आपसी व्यवहार के लिए हिन्दी सीखना जरुरी है ।

* पद्य :- अभिनव मनुष्य

१. दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय क्या है ?

उत्तर :- दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय है कि बुध्दि का अहंकार छोडकर प्रेम से दिल जीतना, द्वेष-ईर्ष्या त्यागकर भाईचारे से रहना, मानव मानव के बीच प्यार का रिश्ता जोडना । यही बात मानव का परिचय देती है ।

२. दिनकर जी के अनुसार मानव के लिए श्रेयस्कर क्या है ?

उत्तर :- दिनकर जी के अनुसार मानव के लिए श्रेयस्कर यह है कि जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोडकर आपस की दूरी को मिटाए वही मानव कहलाने का अधिकारी है।

* पद्य :- सूर श्याम

१.कृष्ण बलराम के साथ खेलने कों नहीं जाना चाहता ?

उत्तर :- कृष्ण बलराम के साथ खेलने जाना नहीं चाहता क्योंकि बलराम कृष्ण को चिढाता है, कहता है

यशोदा माँ ने उसे जन्म नहीं दिया है बल्कि कृष्ण को मोल लिया गया है ।

२. कृष्ण अपनी माता यशोदा के प्रति क्यों नाराज है ?

उत्तर :- माता यशोदा भैय्या बलराम को कभी मारती नहीं पीठती नहीं इसलिए कृष्ण अपनी माता के प्रति नाराज है ।

३. यशोदा कृष्ण के क्रोध को कैसे शांत करती है ?

उत्तर :- यशोदा कृष्ण के क्रोध को शांत करने के लिए कृष्ण के क्रोधित मुख को चुमते हुए माता यशोदा कृष्ण को सांत्वना देती है कि बलराम तो जन्म से ही चुगलखोर और बडा दुष्ट है । गोधन की कसम मैं तेरी माता हूँ और तू मेरा पुत्र है ।

* पाठ :- शनि

१. सूर्य के पुत्र कौन थे ? शनै:चर का अर्थ क्या है ?

उत्तर :- शनि महाराज सूर्य के पुत्र थे । शनै:चर का अर्थ होता है - धीमी गति से चलनेवाला ।

२. शनि का निर्माण किस प्रकार हुआ है ?

उत्तर :- बृहस्पति की तरह शनि का वायुमंदल भी हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन तथा एमोनिया गैसों से शनि का निर्माण हुआ है ।

* पाठ :- सत्य की महिमा

१.सत्य क्या होता है ? उसका रुप कैसे होता है ?

उत्तर :- जो कुछ भी अपनी आँखों से देखा, बिना नमक-मिर्च लगाए बोल दिया- यही तो सत्य है । सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है । यही सत्य का रुप होता है ।

२. शास्त्र में सत्य बोलने का तरीका कैसे समझाया गया है ?

उत्तर :- शस्त्र में सत्य बोलने का तरीका ऐसे समझाया गया है कि- 'सत्यं ब्रूतात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यमप्रियम' अर्थात, सच बोलो जो दूसरों को प्रिय लगे, अप्रिय सत्य मत बोलो ।

३. हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास क्यों डालना चाहिए ?

उत्तर :- हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास डालना चाहिए क्योंकि सत्य वह चिनगारी है असत्य पल भर में भस्म हो जाता है ।

* पाठ :- अनमोल समय

१. समय को अमूल्य क्यों माना जाता है ?

उत्तर :- समय अनमोल रत्न है । समय ही जीवन है । हमारा जीवन इसी समय से बना है । समय के नष्ट हो जाने से जीवन भी विनष्ट हो जाता है । खोया हुआ समय बार-बार नहीं आता ।

३. जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक तत्व कौन सा है ?

उत्तर :- जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक तत्व है कि - समय कभी रुकता नहीं है । इसलिए सबको साथ-साथ चलकर उसका सदुपयोग कर लेना चाहिए ।

• तीन अंकोवाले प्रश्न *

* पाठ :- भक्तों के भगवान

१. भिखारी और लरोडपति में से आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं ? क्यों ?

उत्तर :- भिखारी और लरोडपति में से भिखारी को ही श्रेष्ठ मानते हैं । क्योंकि भिखारी ने भीख माँगने पर भी करोडपति ने पैसे नहीं दिए, लेकिन उसी करोडपति को भिखारी ने अपनी जान की परवाह किए बिना मोटर दुर्घटना से बचाया । व्यापार में नफा होने से करोडपति भगवान को कोसता है, वही भिखारी अपनी परिस्थिति के लिए भगवान से प्रार्थना करता है ।

२. भिखारी को भगवान की लीला क्यों अजीब लगी ?

उत्तर:- जो करोडपति भीख माँगने पर कुछ नहीं देता वही अपनी जान बचाने पर भिखारी को एक सौ रुपये देता है । सबको अपने प्राण प्रिय होते हैं । जो करोडपति पहले भगवान को कोसता हुआ पत्थर कहता था, भिखारियों को दूर हटने को कहता था अब वह इनसान में भी भगवान को देख रहा है । इसलिए भिखारी को भगवान की लीला अजीब लगी ।

* पाठ :- वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का

१. पर्यावरण संरक्षण में तिम्मक्का का क्या योगदान है ?

उत्तर :- पर्यावरण संरक्षण में तिम्मक्का का योगदान अप्रतिम है - जानवरों के लिए तिम्मक्का दंपत्ति ने पीने के पानी का इंतजाम किया । तिम्मक्का ने बरगद के डालों को रास्ते के दोनों ओर लगाये । उन पेडों को भेड-बकरियों से रक्षा करने की व्यवस्था की । उन्हें अपने बच्चों की तरह प्रेम से पाला-पोसा ।

२. तिम्मक्का को किन-किन पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है ?

उत्तर :- तिम्मक्का को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे कि- नाडोज पुरस्कार, राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार, इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र, वीर चक्र, कर्नाटक कल्पवल्ली, गाड फ्री फिलिप्स धैर्य पुरस्कार, विशालाक्षी पुरस्कार, कर्नाटक सरकार के महिला और शिशु कल्याण विभाग के द्वारा सम्मान पत्र आदि ।

३. तिम्मक्का एक आदर्श व्यक्तित्व हैं । कैसे ?

उत्तर :- तिम्मक्का एक आदर्श व्यक्तित्व हैं । क्योंकि
१.संतान न होने के करण तिम्मक्का मन छोटा किए बिना दत्तक पुत्र को गोद ले लिया ।
२.रास्ते के दोनों तरफ बरगद के पेड लगाकर पर्यावरण संरक्षण का बीडा उठाया ।

३.अपने पति की याद में तिम्मक्का ने हुलिकल ग्राम में गरीबों की नि:शुल्क चिकित्सा के लिए एक अस्पताल के निर्माण करने का संकल्प किया है ।
४.तिम्मक्का दीन-दलितों की सेवा के लिए पुरस्कार के रुप में आयी धनराशि को समर्पित कर रही है । पर्यावरण संरक्षण के साथ तिम्मक्का और अन्य सामाजिक काम भी कर रही है ।

* पद्य:- मातृभूमि

१.भारत माँ के प्रकृति-सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
उत्तर :- भारत के खेत हरे-भरे सुंदर हैं ।फल-फूलों से युक्त हैं यहाँ के वन-उपवन । भारत भूमि के अंदर व्यापक खनिज संपत्ति भरा हुआ है । सुख-संपत्ति, धन-धाम को माँ मुक्त हस्त से बाँट रही हैं । ऐसी अपूर्व है भारत माँ का प्रकृति-सौंदर्य ।

२. मातृभूमि का स्वरुप कैसे सुशोभित है ?
उत्तर :- भारत माँ के एक हाथ में न्याय-पताका है, और दूसरे हाथ में ज्ञान-दीप है। जग के रुप को बदलने के लिए कवि भारत माँ से निवेदन कर रहे हैं । आज माँ के साथ कोटि-कोटि भारत की जनता है । सभी ओर शहर और गाँवों में जय हिन्द का नाद गूँज उठा है । इस तरह मातृभूमि का स्वरुप सुशोभित है ।

* पद्य:- तुलसी के दोहे

*** भावार्थ लिखिए :-**

१.मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक ।
पालै पोसै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥
भावार्थ :- तुलसीदास जी कहते हैं कि मुखिया मुख के समान होना चाहिए जो खाने-पीने को तो अकेला है, लेकिन विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन-पोषण करता है ।

२. तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक ।
सहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसो एक ॥
भावार्थ :- तुलसीदास के अनुसार विपत्ति के साथी विद्या, विनय और विवेक है । जो राम पर भरोसा करता है वह साहसी, सत्यव्रती और सुकृतवान बनता है ।

• चार अंकोवाले प्रश्न *

* पाठ :- बसंत की सच्चाई

१.बसंत ईमानदार लडका है । कैसे ?
उत्तर :- एक बडे शहर के बाजार में बसंत छलनी, बटन, दियासलाई आदि चीजें बेचता है । पं. राजकिशोर बिना कोई वस्तु बसंत को पैसे देने आये तो ईमानदार बसंत ने पैसे नहीं लिए ।

राजकिशोर छलनी लेने को तैयार हो गए, पर पैसे नहीं थे, नोट था । तब बसंत उस नोट को भुना लाने को बजार में गया । अचानक एक मोटर उसके ऊपर से निकल गई । पैर तूट गए, बसंत घर में पडा रहा और राजकिशोर जी के पैसे वापिस दे के लिए अपने भाई प्रताप को भेज दिया । ऐसी थ बसंत की ईमानदारी । सचमें बसंत ईमानदार लडक ।

२. राजकिशोर के मानवीय व्यवहार का परिच दीजिए ।
उत्तर :- सुबह से बसंत के एक भी सामान नहीं बिके आवश्यकता न होते हुए भी पंडित राजकिशोर ए छलनी लेने को तैयार हुए । पहले तो बसंत की बा सुनकर कोई भी सामान लिए बगैर ही बसंत को पै देने को तैयार थे ।

पंडित राजकिशोर को प्रताप से पता चला कि बसंत मोटर के नीचे आ गया, उसके पैर कुचले गये तब पंडित राजकिशोर प्रताप के साथ बसंत को देख भीखू अहीर के घर आये । डॉक्टर को भी बुलाया औ एम्बुलंस के लिए फोन कर आते हैं । इस पंडि राजकिशोर बसंत की मदद करते हैं । ऐसा थ राजकिशोर जी का मानवीय व्यवहार ।

अथवा

पाठ :- कर्नाटक संपदा

१. कर्नाटक की शिल्पकला का परिचय दीजिए :-
उत्तर :- कर्नाटक राज्य की शिल्पकला अनोखी है बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लु में जो मंदिर हैं, उनव शिल्पकला और वास्तुकला अद्‌भुत है । बेलूर, हलेबीडु सोमनाथपुर के मंदिरों में पत्थर की जो मूर्तियाँ हैं, सजीव लगती हैं । ये सुंदर मूर्तियाँ हमे रामायण महाभारत, पुराणों की कहानियाँ सुनाती हैं श्रवणबेलगोल में ५७ फूट ऊँची गोमटेश्वर की एकशि प्रतिमा है । बिजापुर नगर का प्रमुख आकर्षक स्था गोलगुंबज है । मैसूर का राजमहल कर्नाटक के वैभ का प्रतीक है । प्राचीन सेंट फिलोमिना चर्च, जगमोह राजमहल पुरातत्व वस्तु संग्रहालय हैं ।

२. कर्नाटक के साहित्यकारों की कन्नड भाषा त संस्कृति को क्या देन है ?
उत्तर :- कर्नाटक के साहित्यकारों की कन्नड भाषा त संस्कृति को देन अपूर्व है । वचनकार बसवण्ण क्रांतिकारी समाज सुधारक थे । अक्कमहादेवी अल्लमप्रभु, सर्वज्ञ जैसे अनेक संतों ने अपने अनमो 'वचनों' द्वारा प्रेम, दया और धर्म की सीख दी है पुरंदरदास, कनकदास आदि भक्त कवियों ने भक्ति नीति, सदाचार के गीत गाये हैं । पंप, रन्न, पो कुमारव्यास, हरिहर, राघवांक आदि ने महान काव्यों व रचना कर कन्नड साहित्य को समृध्द बनाया है । अभ तक आठ कन्नड साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप है ।

कन्नड में अनुवाद

१.उनका परिवार सांस्कृतिक नेतृत्व के लिए समस्त बंगाल में प्रसिध्द था ।
ಅವರ ಕುಟುಂಬವು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆತೃತ್ವಗೊಸ್ಕರ ಸಂಪೂರ್ಣ ಬಂಗಾಳದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿತ್ತು.
२.छोटी आयु में उन्होनें अपनी पिता की संपदा का भार संभाला ।
ಚಿಕ್ಕ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಯೇ ಅವರು ತಮ್ಮ ತಂದೆಯ ಸಂಪತ್ತಿನ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತುಕೊಂಡರು.
३.महात्माजी उनसे अत्यंत प्रभावित थे ।
ಮಹಾತ್ಮಾಜೀಯವರು ಅವರಿಂದ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರಭಾವಿತರಾಗಿದ್ದರು.
४.हम कह सकते हैं कि रवींद्र जी का अंग्रेजी साहित्य में उच्च स्थान है ।
ನಾವು ಹೇಳಬಹುದು ರವೀಂದ್ರಜೀಯವರಿಗೆ ಆಂಗ್ಲ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಸ್ಥಾನವಿದೆ/
५.'गीतांजलि' का एक-एक गीत भावों से परिपूर्ण है ।
'ಗೀತಾಂಜಲಿ' ಒಂದೊಂದು ಹಾಡವು ಭಾವಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ.
६.साहूकार की एक अलीशान कोठी थी ।
ಸಾಹುಕಾರರ ಒಂದು ವೈಭವಪೂರ್ಣ ಬಂಗಲೆಯಿತ್ತು.
७. करोडपति के कार्यलम में कभी कोई अंतर नहीं आता था ।
ಕೊಟ್ಯಾಧೀಶನ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಯಾವತ್ತು ಯಾವುದೇ ಬದಲಾವಣೆ ಆಗುತ್ತಿರಲ್ಲಿಲ್ಲ.
८. भगवान से उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली ।
ದೇವರಿಂದ ಆತನಿಗೆ ಯಾವುದೆ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಸಿಗಲ್ಲಿಲ್ಲ.
९. रास्ते में भिखारी को एक छोटा बच्चा मिला ।
ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷುಕನಿಗೆ ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ಮಗು ಸಿಕ್ಕಿತು.
१०. भिखारी के रुप में आकर तुम ही ने मेरी रक्षा की ।
ಭಿಕ್ಷುಕನ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಬಂದು ನೀನೆ ನನ್ನ ರಕ್ಷಣೆ ಮಾಡಿದ್ದು.
११, इंटरनेट आधुनिक जीवनशैली का महत्वपूर्ण अंग बन गया है ।
ಇಂಟರನೆಟವು ಆಧುನಿಕ ಜೀವನಶೈಲಿಯ ಮಹತ್ವಪೂರ್ಣ ಅಂಗವಾಗಿದೆ.
१२. इंटरनेट द्वारा घर बैठे-बैठे खरीदारी कर सकते हैं ।
ಇಂಟರನೆಟ ಮೂಲಕ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಂಡು ಖರಿದಿಸಬಹುದು.
१३. इंटरनेट की सहायता से बेरोजगारी को मिटा सकते हैं ।
ಇಂಟರನೆಟಿನ ಸಹಾಯದಿಂದ ನಿರುದ್ಯೋಗದವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಬಹುದು.
१४.कई घंटे के उपरांत मुँह में एक बूँद पानी टपकाया।
ಅನೇಕ ಘಂಟೆಗಳ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ಬಳಿಕ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಹಣಿ ನೀರನ್ನು ಹಾಕಲಾಯಿತು.
१५.इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।
ಇಷ್ಟು ಸಣ್ಣ ಜೀವಿಗೆ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ನಾಯಿ-ಬೆಕ್ಕಿನಿಂದ ಕಾಪಾಡುವುದು ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸಮಸ್ಯೆಯಾಗಿತ್ತು.
१६.दिनभर गिल्लू ने न कुछ खाया न बाहर गया।
ದಿನವಿಡಿ ಗಿಲ್ಲು ಏನನ್ನು ತಿನ್ನಲ್ಲು ಇಲ್ಲ, ಹೊರಗು ಬರಲೆ ಇಲ್ಲ.
१७.गिल्लू मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता था।
ಗಿಲ್ಲು ನನ್ನ ಹತ್ತಿರ ಇಟ್ಟ ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆಯ ಮೆಲೆ ಮಲಗುತ್ತಿದ್ದ.
१८.कर्नाटक में कन्नड भाषा बोली जाती है और इसकी राजधानी बेंगलूरु है।
ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಮಾತನಾಡುತ್ತರೆ ಮತ್ತು ಇದರ ರಾಜಧಾನಿ ಬೆಂಗಳೂರುಯಾಗಿದೆ.
१९.कर्नाटक में चंदन के पेड विपुल मात्रामें हैं।
ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಗಂಧದ ಮರಗಳು ಸಾಕಷ್ಟು ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿವೆ.
२०.जगनमोहन राजमहल का पुरातत्व वस्तु संग्रहालय अत्यंत आकर्षणीय है।
ಜಗಮೋಹನ ರಾಜಮಹಲದ ಪುರಾತತ್ವ ವಸ್ತು ಸಂಗ್ರಹಾಲಯವು ಅತ್ಯಂತ ಆಕರ್ಷೀಯವಾಗಿದೆ.
२१.वचनकार बसवण्ण क्रन्तिकारी समाज सुधारक थे।
ವಚನಕಾರ ಬಸವಣ್ಣನವರು ಕ್ರಾಂತಿಕಾರಿ ಸಮಾಜ ಸುಧಾರಕರಾಗಿದ್ದರು.
२२.हम आपको आने-जाने का पहले दर्जे का किराया देंगे।
ನಾವು ನಿಮಗೆ ಬರು-ಹೋಗುವ ಪ್ರಥಮ ಶ್ರೇಣಿಯ ಬಾಡಿಗೆಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತೇವೆ.
२३. स्टेशन पर मेरा खूब स्वागत हुआ।
ಸ್ಟೇಶನದಲ್ಲಿ ನನ್ನನ್ನು ವಿಜ್ರಂಭನೆಯಿಂದ ಸ್ವಾಗತಿಸಿದರು.
२४.देखिए चप्पलें एक जगह नहीं उतारना चाहिए।
ನೋಡಿ, ಚಪ್ಪಲಿಗಳನ್ನು ಒಂದೆ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಬಿಡಬಾರದು.
२५.अब मैं बचा हूँ। अगर रुका तो मैं ही चुरा लिया जाउंगा।
ಇಗ ನಾನು ಉಳಿದಿದ್ದೆನೆ, ಇಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದರೆ ನಾನು ಸಹ ಕಳವು ಆಗಿಹೋಗುತ್ತೇನೆ.
२६.अपना दत्तकपुत्र खोकर तिम्मक्का बहुत दुःखी हुई।
ತನ್ನ ದತ್ತು ಮಗುವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ತಿಮ್ಮಕ್ಕ ಬಹಳ ದು:ಖಿತಳಾದಳು.
२७.उन्हें अपने बच्चों की तरह प्रेम से पाला-पोसा।
ಅವುಗಳನ್ನು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಂತೆ ಸಾಕಿ-ಸಲುಹಿದಳು
२८.तिम्मक्का के जीवन में मुसीबत की घडियाँ शुरु हुईं

ತಿಮ್ಮಕ್ಕಳ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಮಸ್ಯೆಯ ಕಾಲ ಶುರುವಾಯಿತು.

೨೯.तिम्मक्का ने अबतक ३०० से भी अधिक पेड लगाये हैं।

ತಿಮ್ಮಕ್ಕಾ ಇವತ್ತಿನವರೆಗೆ ೩೦೦ ಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚು ಗಿಡ-ಮರಗಳನ್ನು ನೆಟ್ಟಿದ್ದಾಳೆ.

೩೦.पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ तिम्मक्का सामाजिक कार्य भी कर रही है।

ಪರಿಸರ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯ ಜೋತೆಗೆ ತಿಮ್ಮಕ್ಕಾ ಸಾಮಾಜಿಕ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಸಹ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಳೆ.

೩೧. डॉ. कंबार कन्नड नाटक तथा काव्यक्षेत्र के शिखरपुरुष हैं।

ಡಾ|| ಕಂಬಾರರು ಕನ್ನಡ ನಾಟಕ ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯಕ್ಷೆತ್ರದ ಶಿಖರಪುರುಷರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

೩೨. मुझ में पढाई की इच्छा तीव्र होने के कारण मैं गोकाक में पढाई करने में कामयाब हुआ।

ನನಗೆ ಓದಿನಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟು ಆಸಕ್ತಿ ಇದ್ದಿದ್ದರಿಂದ ಗೊಕಾಕನಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಣ ಪಡೆಯುದರಲ್ಲಿ ಯಶಸ್ವಿಯಾದೆ.

೩೩. मैं शुरु से ही पौराणिक प्रसंगों को मन लगाकर सुनता था।

ನಾನು ಪ್ರಾರಂಭದಿಂದಲೆ ಪೌರಾಣಿಕ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಮನಸಾರೆ ಕೆಳುತ್ತಿದ್ದೆ.

೩೪. हमे आपसी व्यवहार के लिए हिन्दी सीखना जरुरी है।

ನಮಗೆ ನಮ್ಮ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೆ ಹಿಂದೀ ಕಲಿಕೆ ಅತ್ಯವಶ್ಯವಾಗಿದೆ.

೩೫. मैं आपके प्रति अत्यंत आभारी हूँ।

ನಾನು ನಿಮ್ಮ ಬಗ್ಗೆ ಬಹಳಷ್ಟು ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದೆನೆ.

೩೬.माँ की गोद में सिर रखकर अपार सुख मिलता था।

ತಾಯಿಯ ಮಡಿಲಲ್ಲಿ ತಲೆಯಿಟ್ಟು ಮಲಗಿದರೆ ಅಪಾರ ಸುಖವೆನಿಸುತ್ತಿತ್ತು.

೩೭. मैं भीख नहीं लूँगा।

ನಾನು ಭಿಕ್ಷೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲ.

• पत्र लेखन *

1. छुट्टी पत्र

दिनांक :- 07-07-2014

प्रेषक,
रामू
१० वीं कक्षा, रो.नं.-27
सरकारी हाईस्कूल
लक्कुंडी - 591102.

सेवा में,
प्रधान अध्यापक,
सरकारी हाईस्कूल
लक्कुंडी - 591102.

विषय :- छुट्टी की अनुमति हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

दिनांक 07-07-2014 और 08-07-2014 के दिन हमारे घर में बडे भैया की शादी होनेवाली है, तो इन दिनों मैं स्कूल नहीं आ पाउँगा।

अत: आपसे निवेदन है कि दो दिनों के लिए छुट्टी की अनुमति दें। पठित पाठ को मैं आते ही पूरा कर लूँगा।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी
छात्र,
रामू

2. पिताजी को पत्र

दिनांक :- 10-08-2014

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ सकुशल हूँ। आपका पत्र मिला, जो पढकर अत्यंत खुशी हुई। मेरी पढाई ठीक चल रही है। आपकी आज्ञानुसार मन लगाकर दिन-रात पढाई कर रहा हूँ। खेल-कूद या गपशप में समय बर्बाद नहीं करता। आप लोग खून-पसीना एक करके हमारी शिक्षा के लिए सामग्री जोडते हैं। आपके परिश्रम के बारेमें मैं जानता हूँ। आप मेरे पढाई के बारेमें चिंता न कीजिए।

माताजी को मेरा प्रणाम, छोटी बहन को ढेर सारा प्यार।

आपका
प्रिय पुत्र,
राजु

सेवा में,
श्री रामचंद्र हेगडे
मु/पो- लक्कुंडी- 591102
तहसील- बैलहोंगल
जिला- बेलगांव

• निबंध लेखन *

१. महंगाई: एक समस्या

* **प्रस्तावना** :- महंगाई आज हर किसी के मुख पर चर्चा का विषय बन चुका है। विष्व का हर देष इस से ग्रसित होता जा रहा है। भारत जैसे विकासषील देषों के लिए तो यह चिंता का विषय बनता जा रहा है। महंगाई ने आम जनता का जीवन अत्यन्त दुष्कर कर दिया है। आज दैनिक उपभोग की वस्तुएं हों अथवा रिहायशी वस्तुएं, हर वस्तु की कीमत दिन-व-दिन बढ़ती और पहुंच से दूर होती जा रही है।

* **महंगाई के कारण** :- महंगाई के कारण हम अपने दैनिक उपभोग की वस्तुओं में कटौती करने को विवष होते जा रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक जहां साग-सबिजयां कुछ रूपयों में हो जाती थीं, आज उसके लिए लोगों को सैकड़ों रूपये चुकाने पड़ रहे हैं। वेतनभोगियों के लिए तो यह अभिषाप की तरह है। महंगाई की तुलना में वेतन नहीं बढ़ने से वेतन और खर्च में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है। ऐसे में सरकार को हस्तक्षेप करके कीमतों पर नियंत्रण रखने के दूरगामी उपाय करना चाहिए। सरकार को महंगाई के उन्मूलन हेतू गहन अध्ययन करना चाहिए और ऐसे उपाय करना चाहिए ताकि महंगाई डायन किसी को न सताए।

*** उपसंहार** :- महंगाई के लिए तेजी से बढ़ती जनसंख्या, सरकार द्वारा लगाए जाने वाले अनावष्यक कर तथा मांग की तुलना में आपूर्ति की कमी है। बेहतर बाजार व्यवस्था से कुछ हद तक मुकित मिलेगी। पेटोलियम उत्पाद, माल भाड़ा, बिजली आदि जैसी मूलभूत विषयों पर जब-तब बढ़ोतरी नहीं करना चाहिए। इन में वृद्धि का विपरित प्रभाव हर वस्तु के मूल्य पर पड़ता है। सरकार की चपलता ही महंगाई को नियंत्रित कर सकती है।

*****

२. स्वच्छ भारत अभियान

* **प्रस्तावना** :- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान "स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है" कहा था। वे भारत के बुरे और गन्दी स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने भारत के लोगों को साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे और इससे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने पे बहोत जोर दिया था। हालांकि यह लोगो के कम रूचि के कारण असफल रहा। भारत की आजादी के कई वर्षों के बाद, सफाई के प्रभावी अभियान के रूप में इसे आरम्भ किया गया है और लोगो के सक्रिय भागीदारी चाहती है जिससे इस मिशन को सफलता मिले।

* **स्वच्छ भारत अभियान की महता** :- भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जून 2014 में संसद को संबोधित करते हुए कहा कि "एक स्वच्छ भारत मिशन शुरू किया जाएगा जो देश भर में स्वच्छता, वेस्ट मैनेजमेंट और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए होगा। यह महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर 2019 में हमारे तरफ से श्रद्धांजलि होगी"। महात्मा गांधी के सपने को पूरा करने और दुनिया भर में भारत को एक आदर्श देश बनाने के क्रम में, भारत के प्रधानमंत्री ने महात्मा गांधी के जन्मदिन (2 अक्टूबर 2014) पर स्वच्छ भारत अभियान नामक एक अभियान शुरू किया। इस अभियान के पूरा होने का लक्ष्य 2019 है जो की महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती है।

इस अभियान के माध्यम से भारत सरकार वेस्ट मैनेजमेंट तकनीकों को बढ़ाने के द्वारा स्वच्छता की समस्याओं का समाधान करेगी। स्वच्छ भारत आंदोलन पूरी तरह से देश की आर्थिक ताकत के साथ जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी के जन्म की तारीख मिशन के शुभारंभ और समापन की तारीख है। स्वच्छ भारत मिशन शुरू करने के पीछे मूल लक्ष्य, देश भर में शौचालय की सुविधा देना, साथ ही दैनिक दिनचर्या में लोगों के सभी अस्वस्थ आदतो को समाप्त करना है। भारत में पहली बार सफाई अभियान 25 सितंबर 2014 में शुरू हुयी और इसका आरम्भ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सड़क की सफाई से की गयी।

* **उपसंहार** :- इस मिशन की सफलता परोक्ष रूप से भारत में व्यापार के निवेशकों का ध्यान आकर्षित करना, जीडीपी विकास दर बढ़ाने के लिए, दुनिया भर से पर्यटकों को ध्यान खींचना, रोजगार के स्रोतों की विविधता लाने के लिए, स्वास्थ्य लागत को कम करने, मृत्यु दर को कम करने, और घातक बीमारी की दर कम करने और भी कई चीजो में सहायक होंगी। स्वच्छ भारत अधिक पर्यटकों को लाएगी और इससे आर्थिक हालत में सुधार होगी। भारत के प्रधानमंत्री ने हर भारतीय को 100 घंटे प्रति वर्ष समर्पित करने के लिए अनुरोध किया है जोकि 2019 तक इस देश को एक स्वच्छ देश बनाने के लिए पर्याप्त है।

३. इंटरनेट

* **प्रस्तावना** :- आधुनिक समय में, पूरी दुनिया में इंटरनेट एक बहुत ही शक्तिशाली और दिलचस्प माध्यम बनता जा रहा है। ये एक नेटवर्कों का नेटवर्क है और कई सारी सेवाओं तथा संसाधनों का समूह है जो हमें कई प्रकार से लाभ पहुँचाता है। इसके इस्तेमाल से हमलोग कहीं से भी वर्ल्ड वाइड वेब तक पहुँच सकते है। ये हमें बड़ी तादाद में सुविधा मुहैया कराता है जैसे-ईमेल, सर्फिंग सर्च इंजन, सोशल मीडिया के द्वारा बड़ी हस्तियों से जुड़ना, वेब पोर्टल तक पहुँच, शिक्षाप्रद वेबसाइटों को खोलना, रोजमर्रा की सूचनाओं से अवगत रहना, विडियो बातचीत आदि। ये सभी का सबसे अच्छा दोस्त बनता है।

* **इंटरनेट की महता** :- आधुनिक समय में लगभग हर कोई इंटरनेट का इस्तेमाल विभिन्न उद्देश्यों के लिये कर रहा है। जबकि हमें अपने जीवन पर इससे पड़ने वाले फायदे-नुकसान के बारे में भी जानना चाहिये। विद्यार्थीयों के लिये इसकी उपलब्धता जितनी लाभप्रद है उतनी ही नुकसानदायक भी क्योंकि बच्चे अपने माता-पिता के चोरी से इसके माध्यम से गलत वेबसाइटों का भी इस्तेमाल करते है जोकि उनके भविष्य

को नुकसान पहुँचा सकता है। ज्यादातर माता-पिता इस खतरे को समझते है लेकिन कुछ इसे नज़रअंदाज कर देते है और खुलकर इंटरनेट का इस्तेमाल करते है। इसलिये घर में बच्चों द्वारा इंटरनेट का इस्तेमाल अभिवावकों की देखरेख में होनी चाहिये। अपने कम्प्यूटर सिस्टम में पासवर्ड और प्रयोक्ता नाम डाल कर अपने खास डाटा को दूसरों से सुरक्षित रख सकते है। इंटरनेट हमें किसी भी ऐप्लिकेशन प्रोग्राम के द्वारा अपने दोस्त, माता-पिता और शिक्षकों को किसी भी क्षण संदेश भेजने की आजादी देता है। ये जान कर हैरानी होगी कि उत्तरी कोरिया, म्यांमार आदि कुछ देशों में इंटरनेट पर पाबंदी है क्योंकि वो इसे बुरा समझते है।

* **उपसंहार** :- कभी-कभी इंटरनेट से सीधे-तौर पर कुछ भी डाउनलोड करने के दौरान, हमारे कम्प्यूटर में वाइरस, मालवेयर, स्पाइवेयर, और दूसरे गलत प्रोग्राम आ जाते है जो हमारे सिस्टम को नुकसान पहुँचा सकते है। ऐसा भी हो सकता है कि हमारे सिस्टम में रखे डाटा को बिना हमारी जानकारी के पासवर्ड होने के बावजूद भी इंटरनेट के द्वारा हैक कर लिया जाये। इंटरने से भी लाभ भी हैं और हानियाँ भी हैं, अब सिर्फ हम निर्भर होता है कि इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं।

४. बढती हुई जनसंख्या

* **प्रस्तावना** :- जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के लिए अमूल्य पूंजी होती है, जो वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करती है, वितरण करती है और उपभोग भी करती है । जनसंख्या देश के आर्थिक विकास का संवर्द्धन करती है । इसीलिए जनसंख्या को किसी भी देश के साधन और साध्य का दर्जा दिया जाता है । लेकिन अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती । फिर चाहे वह अति जनसंख्या की ही क्यों न हो ? वर्तमान में भारत की जनसंख्या वृद्धि इसी सच्चाई का उदाहरण है ।

* **जनसंख्या वृद्धि की समस्या** :- जनसंख्या वृद्धि के कारण पूरे देश की दो तिहाई शहरी आबादी को २०३० में शुद्ध पेय जल नसीब नहीं होगा । वर्तमान में पानी की प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति उपलब्धता जहाँ १५२५ घन मी. है, वहीं २०२५ में यह उपलब्धता मात्र १०६० घन मी. होगी । वर्तमान में प्रति दस हजार व्यक्तियों पर ३ चिकित्सक तथा १० बिस्तर है, २०३० में उनके बारे में सोचना भी मुश्किल होगा । भारत की जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार राज्यों में आंध्र-प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल देश की कुल आबादी का १४ प्रतिशत योगदान करते हैं तो वहीं महाराष्ट्र, गुजरात इसमें ११ प्रतिशत की वृद्धि करते हैं । जनसंख्या वृद्धि के बोझ का ही यह परिणाम है कि एक तरफ जहाँ हमारी जमीन उर्वरकों के कारण अनउपजाऊ होती जा रही है । पैदावार कम होने के कारण लोग आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं ।

विश्व के कृषि भू-भाग का मात्र २.४ प्रतिशत भारत में है जबकि यहाँ की आबादी दुनिया की कुल आबादी का १६.७ प्रतिशत है । विश्व में सबसे पहले १९५२ में आधिकारिक रूप से जनसंख्या नियंत्रण हेतु परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाया ।

* **उपसंहार** :- जनसंख्या वृद्धि की गति से मानव की आवश्यकताओं और संसाधनों की पूर्ति करना असंभव होता जा रहा है । इससे जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है । अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और गरीब । अमीर-गरीब के बीच की खाई गहराती जा रही है । पर्यावरण विषाक्त करने में भी जनसंख्या एक प्रमुख कारण है । इन सारी बातों पर गौर करें तो यही निष्कर्ष निकलकर आता है कि जनसंख्या पर नियंत्रण युद्ध स्तर पर करना होगा ।

५. बेरोजगारी

प्रस्तावना :- उस विशेष अवस्था को, जब देश में कार्य करनेवाली जनशक्ति अधिक होती हैं किंतु काम करने के लिए राजी होते हुए भी बहुतों को प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता, **बेरोजगारी** (Unemployment) की संज्ञा दी जाती है। ऐसे व्यक्तियों का जो मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से कार्य करने के योग्य और इच्छुक हैं परंतु जिन्हें प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता, उन्हें **बेकार** कहा जाता है। मजदूरी की दर से तात्पर्य प्रचलित मजदूरी की दर से है और मजदूरी प्राप्त करने की इच्छा का अर्थ प्रचलित मजदूरी की दरों पर कार्य करने की इच्छा है। यदि कोई व्यक्ति उसी समय काम करना चाहे जब प्रचलित मजदूरी की दर पंद्रह रुपए प्रतिदिन हो और उस समय काम करने से इन्कार कर दे जब प्रचलित मजदूरी बारह रुपए प्रतिदिन हो, ऐसे व्यक्ति को बेकार अथवा बेरोजगारी की अवस्था से त्रस्त नहीं कहा जा सकता।

* **बेरोजगारी समस्या का असर** :- भारत एक विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र है. जनसंख्या जितनी तेजी से विकास कर रही है, व्यक्तियों का आर्थिक स्तर और रोजगार के अवसर उतनी ही तेज गति से गिरते जा रहे हैं. भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह संभव नहीं है कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार दिलवा सके. रोजगार की तलाश में दिन-रात एक कर रहे व्यक्तियों की संख्या, साधनों और उपलब्ध अवसरों की संख्या से कहीं अधिक है. यही कारण है कि आज भी अधिकांश युवा बेरोजगारी में ही जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हैं. बेरोजगारी से जुड़ा मसला केवल बढ़ती जनसंख्या तक ही सीमित नहीं है. हमारी व्यवस्था और उसमें व्याप्त कमियां भी इसके लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं. भ्रष्टाचार ऐसी ही एक सामाजिक और नैतिक बुराई है, जिसका अनुसरण हमारी सरकारें और व्यवस्था बिना किसी हिचक के करती हैं. पैसे के एवज में अवसरों की दलाली करना या भाई-भतीजावाद के

फेर में पड़ते हुए अपने संभावियों को स्थान उपलब्ध करवाना कोई नई बात नहीं, बल्कि हमारी सोसाइटी की एक परंपरा है. जिसका कुप्रभाव योग्य व्यक्तियों और उनकी काबिलियत पर पड़ता हैं. परिणामस्वरूप कई युवा विवश होकर अपने परिवार के लिए अनैतिक कृत्यों में लिप्त हो जाते हैं। इतना ही नहीं विकास और औद्योगीकरण के नाम पर हमारी कल्याणकारी सरकारें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों व बड़े पूंजीपतियों के लिए गरीब खेतिहर किसानों से बहुत थोड़े मूल्य पर भूमि का अधिग्रहण करने से भी पीछे नहीं हटतीं. उनका कहना यह है कि अधिग्रहित भूमि बंजर है, जबकि वास्तविकता यह है कि जो भूमि उस किसान और उसके पूरी परिवार को रोजगार उपलब्ध करवाती थी, वह बंजर कैसे हो सकती है।

उपसंहार :- वास्तव में बेरोजगारी कि समस्या एक दानव की तरह हमारे देश के नवयुवकों को खा रही हैI भारत में बढ़ती बेरोजगारी को, जनसंख्या, बड़े पैमाने पर व्याप्त अशिक्षा और भ्रष्टाचार समान रूप से बल प्रदान कर रहे हैं. इसी कारण देश में आपराधिक वारदातों से संबंधित आंकड़ा भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है. अगर संजीदा होकर इन सभी कारकों में से एक को भी घटाने का प्रयास किया जाए, तो बेरोजगारी की समस्या को समाप्त करना आसान हो सकता है।

व्याकरण

1. प्रेरणार्थक शब्द

खाना ---→ खिलाना ---→ खिलवाना
उतरा --→ उतारा --→ उतरवाया

क्रिया	प्र.प्रे. रुप	द्वि.प्रे. रुप
हँसना	हँसाना	हँसवाना
उडना	उडाना	उडवाना
पढना	पढाना	पढवाना
उठना	उठाना	उठवाना
करना	कराना	करवाना

धातु	क्रिया	प्र.प्रे.रुप	द्वि.प्रे.रुप
उठ	उठना	उठाना	उठवाना
चल	चलना	चलाना	चलवाना
लिख	लिखना	लिखाना	लिख्वाना
दौड	दौडना	दौडाना	दौडवाना
ओढ	ओढना	ओढाना	ओढवाना
धातु	क्रिया	प्र.प्रे.रुप	द्वि.प्रे.रुप
जग	जागना	जगाना	जगवाना
जीत	जीतना	जिताना	जितवाना
खेल	खेलना	खिलाना	खिलवाना
बैठ	बैठना	बिठाना	बिठवाना

- **पाठों के अभ्यास से :-**

क्रिया	प्रथम प्रे. रुप	द्वितीय प्रे. रुप
पढना	पढाना	पढवाना

लिखना	लिखाना	लिखवाना
करना	कराना	करवामा
उठना	उठाना	उठवाना
चलना	चलाना	चलवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
समझना	समझाना	समझवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
पकडना	पकडाना	पकडवाना
बैठना	बिठाना	बिठवाना
चिपकना	चिपकाना	चिपकवाना
मिलना	मिलाना	मिलवाना
देखना	दिखाना	दिखवाना
छेडना	छिडाना	छिडवाना
भेजना	भिजाना	भिजवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
ठहरना	ठहराना	ठहरवाना
लौटना	लौटाना	लौटवाना
उतरना	उतराना	उतरवाना
पहनना	पहनाना	पहनवाना
बनना	बनाना	बनवाना

2. संधि

शिव + आलय = शिवालय (अ+आ=आ)
धर्म + अधिकारी = धर्माधिकारी (अ+अ=आ)

- संधि के भेद :-

१. स्वर संधि
२. व्यंजन संधि
३. विसर्ग संधि

- **स्वर संधि के पाँच भेद :-**

१. दीर्घ संधि
२. गुण संधि
३. वृध्दि संधि
४. यण संधि
५. अयादि संधि

दीर्घ संधि :-

क. समान + अधिकार = समानाधिकार अ+अ=आ
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा अ+आ=आ
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी आ+अ=आ
विद्या + आलय = विद्यालय आ+आ=आ
ख. कवि + इंद्र = कवींद्र इ+इ=ई
गिरि + ईश = गिरीश इ+ई=ई
मही + इंद्र = महींद्र ई+इ=ई
रजनी + ईश = रजनीश ई=ई=ई
ग. लघु + उत्तर = लघूत्तर उ+उ=ऊ
सिंधु + ऊर्जा = सिंधूर्जा उ+ऊ=ऊ
वधू + उत्सव = वधूत्सव ऊ+उ=ऊ
भू + ऊर्जा = भूर्जा ऊ+ऊ=ऊ
घ. पितृ + ऋण = पितृण ऋ+ऋ=ऋ

गुण संधि :-

क. गज + इंद्र = गजेंद्र अ+इ=ए
परम + ईश्वर = परमेश्वर अ+ई=ए
महा + इंद्र = महेंद्र आ+इ=ए
रमा + ईश = रमेश आ+ई=ए
ख. वार्षिक + उत्सव = वार्षिकोत्सव अ+उ=ओ
जल + ऊर्मि = जलोर्मि अ+ऊ=ओ
महा + उत्सव = महोत्सव आ+उ=ओ
महा + ऊर्मि = महोर्मि आ+ऊ=ओ
ग. सप्त + ऋषि = सप्तर्षि अ+ऋ=ऋ
महा + ऋषि = महर्षि आ+ऋ=ऋ

वृध्दि संधि :-

क. एक + एक = एकैक अ+ए=ऐ
मत + ऐक्य = मतैक्य अ+ऐ=ऐ
सदा + एव = सदैव आ+ए=ऐ
महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य आ+ऐ=ऐ
ख. परम + ओज = परमौज अ+ओ=औ
वन + औषधि = वनौषधि अ+औ=औ
महा + ओजस्वी = महौजस्वी आ+ओ=औ
महा + औषधि = महौषधि आ+औ=औ

यण संधि :-

अति + अधिक = अत्यधिक इ+अ=य
इति + आदि = इत्यादि इ+आ=या
प्रति + उपकार = प्रत्युपकार इ+उ=यु
मनु + अंतर = मन्वंतर उ+अ=व
सु + आगत = स्वागत उ+आ=व
पितृ + अनुमति = पित्रनुमति ऋ+अ=र
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा ऋ+आ=र
पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश ऋ+उ=र

अयादि संधि :-

क. चे + अन = चयन ए+अ=अय
ने + अन = नयन ए+अ=अय
ख. गै + अक = गायक ऐ+अ=आय
नै + इका = नायिका ऐ+इ=आय
ग. भो + अन = बवन ओ+अ=अव
पौ + अन = पावन औ+अ=आव
घ. नौ + इक = नाविक औ+इ=आव

व्यंजन संधि :-

१. दिक + गज = दिग्गज
२. सत + वाणी = सद्वाणी
३. अच + अंत = अजंत
४. षट + दर्शन = षड्दर्शन
५. वाक + जाल = वाग्जाल
६. तत + रुप = तद्रूप

विसर्ग संधि :-

नि: + चय = निश्चय
नि: + कपट = निष्कपट
नि: + रस = नीरस
दु: + गंध = दुर्गंध
मन: + रथ = मनोरथ
पुर: + हित = पुरोहित

- **पाठों के अभ्यास से :-**

दिग्गज	दिक+गज	व्यंजन संधि
पर्वतावली	पर्वत+आवली	दीर्घ संधि
जलाशय	जल+आशय	दीर्घ संधि
जगमोहन	जगत+मोहन	वृद्दि संधि
सदाचार	सद+आचार	दीर्घ संधि
अत्यंत	अति+अंत	यण संधि
स्वागत	सु+आगत	यण संधि
सहानुभूति	सह+अनुभूति	दीर्घ संधि
सज्जन	सत+जन	व्यंजान संधि
परोपकार	पर+उपकार	गुण संधि
निश्चिंत	नि+चिंत	विसर्ग संधि
सदैव	सदा+एव	वृध्दि संधि

3. समास

अव्ययीभाव समास :-

विग्रह	सामासिक	पहला पद

	शब्द	अव्यय
जन्म से लेकर	आजन्म	आ

खटके के बिना	बेखटके	बे
पेट भर	भरपेट	भर
जैसा संभव हो	यथासंभव	यथा
बिना जाने	अनजाने	अन

कर्मधारय समास :-

पहला पद	**दूसरा पद**	**समस्त पद**	**विग्रह**
सत	धर्म	सदधर्म	सत है जो धर्म
पीत	अंबर	पीतांबर	पीत (पीला) है जो अंबर
नील	कंठ	नीलकंठ	नील है जो कंठ

क. पहला पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय-

कनक	लता	कनकलता	कनक के समान लता
चंद्र	मुख	चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख

ख. पहला पद उपमेय तथा दूसरा पद उपमान-

मुख	चंद्र	मुखचंद्र	चंद्रमा रुपी मुख
कर	कमल	करकमल	कमल रुपी कर

तत्पुरुष समास :-

क. **कर्म तत्पुरुष** :- कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप होता है ।

स्वर्ग को प्राप्त	स्वर्गप्राप्त
ग्रंथ को लिखनेवाला	ग्रंथकार
गगन को चुमनेवाला	गगनचुंबी
चिडिया को मारनेवाला	चिडियामार
परलोक को गमन	परलोकगमन

ख. **करण तत्पुरुष** :- करण कारक की विभक्ति 'से' 'के द्वारा' का लोप होता है ।

उदा:-
अकाल से पीडित - अकालपीडित
सूर के द्वारा कृत - सूरकृत
शक्ति से संपन्न - शक्तिसंपन्न
रेखा के द्वारा अंकित - रेखांकित
अश्रु से पूर्ण - अश्रुपूर्ण

ग. **संप्रदान तत्पुरुष** :- संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप होता है ।

उदा:-
सत के लिए आग्रह - सत्याग्रह
राह के लिए खर्च - राहखर्च
सभा के लिए भवन - सभाभवन
देश के लिए भक्ति - देशभक्ति
देश के लिए प्रेम - देशप्रेम
गुरु के लिए दक्षिणा - गुरुदक्षिणा

घ. **अपादान तत्पुरुष** :- अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप होता है ।

उदा:-
धन से हीन - धनहीन
जन्म से अंधा - जन्मांध
पथ से भ्रष्ट - पथभ्रष्ट
देश से निकाला - देशनिकाला
बंधन से मुक्त - बंधनमुक्त
धर्म से विमुख - धर्मविमुख

ङ. **संबंध तत्पुरुष** :- संबंध कारक विभक्ति 'का,की,के' का लोप होता है ।

उदा:-
प्रेम का सागर - प्रेमसागर
भू का दान - भूदान
देश का वासी - देशवासी
राजा की सभा - राजसभा
जल की धारा - जलधारा

च. **अधिकरण तत्पुरुष** :- अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' का लोप होता है ।

उदा:-
आप पर बीती - आपबीती
कार्य में कुशल - कार्यकुशल
दान में वीर - दानवीर
शरन में आगत - शरणागत
नर में श्रेष्ठ - नरश्रेष्ठ

व्दिगु समास :-
सात सौ (दोहों) का समूह- सतसई
तीन धाराएँ - त्रिधारा
पाँच वटों का समूह - पंचवटी
तीन वेणियों का समूह - त्रिवेणी
सौ वर्षों का समूह - शताब्दी
चार राहों का समूह - चौराह
बारह मासों का समूह - बारहमासा

द्वंद्व समास :-

विग्रह	समस्तपद
सीता और राम	सीता-राम
पाप अथवा पुण्य	पाप-पुण्य
सुबह और शाम	सुबह-शाम
सुख या दुख	सुख-दुख
दाल और रोटी	दाल-रोटी
इधर और उधर	इधर-उधर
दो और चार	दो-चार
भला या बुरा	भला-बुरा

बहुव्रीहि समास :-
मृग के लोचनों के समान नयन है जिसके- मृगनयनी
महान है जिसकी आत्मा - महात्मा
घन के समान श्याम है जो - घनश्याम
श्वेत अंबर (वस्त्रों) वाली (सरस्वती)- श्वेतांबरी
कंबा है उदर जिसका (गणेश) - लंबोदर
चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके (विष्णु)- चक्रपाणि

तीन है नेत्र जिसके (शिव) – त्रिनेत्र
दस हैं आनन (मुँह) जिसके (रावण) दशानन –
नील है कंठ जिसका (शिव) – नीलकंठ

- **पाठों के अभ्यास से :-**

१.श्रद्धा-भक्ति = श्रद्धा और भक्ति – द्वंद्व समास
२.होशहवास = होश और हवास – द्वंद्व समास
३.चौमासा = चार मासों का समूह – व्दिगु समास
४.महात्मा = महान है आत्मा जिसकी – बहुव्रीहि समास
५.प्रतिदिन = प्रत्येक दिन – अव्ययीभाव समास
६.देश-विदेश = देश और विदेश – द्वंद्व समास
७.जलप्रपात = जल का प्रपात – संबंध तत्पुरुष समास
८.राजवंश = राजा का वंश – संबंध तत्पुरुष समास
९.राजमहल = राजा का महल – संबंध तत्पुरुष समास
१०.भारत-सरकार = भारत की सरकार – तत्पुरुष समास
११.भरपेट = पेट भर – अव्ययीभाव समास
१२.नीलकमल = नीला है जो कमल – कर्मधाराय समास
१३.राम-लक्षण = राम और लक्षण – द्वंद्व समास
१४.नवरात्री = नौ रात्री – व्दिगु समास
१५.वीणापाणी = जिसके हाथ में वीणा है (सरस्वती) – बहुब्रीहि समास

4.अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जो दूसरों की भलाई करता हो – परोपकारी

१. जो हर समय हँसता रहता हो – हँसमुख
२. जो सबसे प्रसन्नतापूर्वक मिलता-जुलता हो – मिलनसार
३. जो ईश्वर में विश्वास करता हो – आस्तिक
४. जो सब कुछ जानता हो – सर्वज्ञ
५. जो गीत गाता हो – गायक
६. जिसकी कल्पना की जा सके – काल्पनिक

- कुछ और उदा :-

अपरिचित, मितभाषी, कवि, कवयित्री, अशक्त, पूजनीय, मांसाहारी, शाकाहारी, निर्दयी, कृपालू, निराकार, सर्वव्यापी, निरर्थक, सदाचारी, सहपाठी ।

- **पाठों के अभ्यास से :-**

१.कविता लिखनेवाला – कवि
२.निबंध लिखनेवाला – निबंधकार
३.लेख लिखनेवाला – लेखक
४.कहानी लिखनेवाला – कहानीकार
५.उपन्यास लिखनेवाला – उपन्यासकार
६.शिकार करनेवाला – शिकारी
७.कपडे धोनेवाला – धोबी
८.सब्जी बेचनेवाला – कुंजडा
९.कपडे बुननेवाला – बुनकर
१०.बहुत बोलनेवाला –बाचाल

5.मुहावरे

अंगूठा दिखाना – देने से स्पष्ट इन्कार करना।

- अन्य उदा :-

अंगारे उगलना – क्रोध में कठोर वचन बोलना
अपना उल्लू सीधा करना- काम निकालना । स्वार्थ पूरा करना ।
आग बबूला होना – क्रोधित होना।
आसमान सिर पर उठाना- शोर करना।
कमर कसना – तैयार होना
खून पसीना एक करना – बहुत मेहनत करना।
छक्के छुडाना – बूरी तरह हराना।
दाल न गलना – सफल न होना

- **पाठों के अभ्यास से :-**

होशहवास उडना = घबरा जाना
बाल-बाल बचना = खतरे से बच जाना
सातवें आसमान पर पहुँचना = अधिक प्रसन्न होना
श्रीगणेश करना = आरंभ करना
नौ-दो ग्यारह होना = भाग जाना
आँखें लाल होना = गुस्सा बढना
घोडे बेचकर सोना = निश्चिंत होकर सोना
चूँ तक न करना = चूप-चाप सहना
पसीना बहाना- परिश्रम करना
हिम्मत न हारना- धीरज रखना
बीडा उठाना- जिम्मेदारी लेना
चने के झाड पर बिठान- अधिक प्रशंसा करना

6. कहावतें

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं – अधिक शोर मचाने वाले काम कम करते हैं ।

- **कुछ और उदा :-**

अधजल गगरी छलकत जाय – कम गुणों वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।
आम के आम गुठकियों के दाम – दुगुणा लाभ
चिराग तले अँधेरा – अपनी बुराईयाँ न दिखाई देना।
चोर की दाढी में तिनका – अपराधी स्वयं भयभीत रहता है।
डूबते को तिनके का सहारा – मुसीबत के समय थोडी सी सहायता बहुत होती है।
हाती के दाँत खाने के और दिखाने के और – सामने कुछ और, पीछे कुछ और।

7. विराम चिह्न

१. अल्प विराम -> (,)
२. अर्ध विराम -> (;)
३. पूर्ण विराम -> (।)
४. प्रश्न चिह्न -> (?)
५. विस्मयादिबोधक चिह्न -> (!)
६. योजक चिह्न -> (-)
७. उध्दरण चिह्न -> (" ") (' ')
८. कोष्ठक चिह्न -> ( )
९. विवरण चिह्न -> (:-) (:)

8. लिंग

- **लिंग के प्रकार**
  १. पुल्लिंग
  २. स्त्रीलिंग

पुल्लिंग :- जैसे- आदमी, बेटा, कुत्ता आदि।
स्त्रीलिंग :- जैसे- लडकी, औरत, माँ आदि।

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
छात्र	छात्रा
आचार्य	आचार्या
नर	नारी
नाना	नानी
कुत्ता	कुतिया
बेटा	बेटिया
सुनार	सुनारिन
नाई	नाइन
ठाकुर	ठाकुराइन
हलवाई	हलवाइन
बालक	बालिका
सेवक	सेविका
सेठ	सेठानी
नौकर	नौकरानी
शेर	शेरनी
मोर	मोरनी
महान	महती
श्रीमान	श्रीमती
भाग्यवान	भाग्यवती
स्वामी	स्वामिनी
एकाकी	एकाकिनी
दाता	दात्री
विधाता	विधात्री
भाई	बहन
नर	मादा

- **पाठों के अभ्यास से :-**

कवि – कवयित्री
लेखक – लेखिका
युवक – युवती
बालक – बालिका
मोर – मोरनी
नौकर – नौकरानी
मालिक – मालकिन
भिखारी – भिखारीन
बच्चा – बच्ची
बूढा – बूढी
लेखक – लेखिका
श्रीमान – श्रीमती
मयूर – मयूरी
कुत्ता – कुतिया
पति – पत्नी
पिता – माता
माँ – बाप

महिला `　　- पुरुष | आदमी　　- औरत

9. कारक

कारक के आठ भेद :-

क्सं	कारक	विभक्ति	रुप
१.	कर्ता कारक	ने	मैं ने, तुम ने, हम ने
२.	कर्म कारक	को	तुम को, आप को
३.	करण कारक	से	हम से, आप से
४.	संप्रदान कारक	को, के लिए	हम को, आप के लिए
५.	अपादान कारक	से	हम से, आप से
६.	संबंध कारक	का, की, के रा. री, रे	आपका, आपकी, आप के हमारा, हमारी, हमारे
७.	अधिकरण कारक	में, पर	हम में, हम पर
८.	संबोधन कारक	अरे, हे, ओ, हो, वाह	हे! राम

10. 'कि' और 'की' का प्रयोग

- 'कि' का प्रयोग :-
- 'कि' कारण बोधक अव्यय है। कार्य कारण वाचक अव्यय के रुप में उप वाक्यों के आरंभ में प्रयोग होता है।

'ಕಿ' ಇದು ಕಾರಣ ಬೋಧಕ ಅವ್ಯಯವಾಗಿದೆ. ಕಾರ್ಯ ಕಾರಣ ವಾಚಕ ಅವ್ಯಯಗಳ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಉಪವಾಕ್ಯಗಳ ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಇದನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಾರೆ.

जैसे-

क) १. राम ने कहा कि उनके पिताजी का नाम दशरथ था।

२. पुलिस ने चोर को इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया।

३. बस रुकी भी नहीं थी कि लोग उसकी ओर दौड पडे।

४. पिताजी मुझे पैसे देनेवाले ही थे कि चाचाजी ने कहा " उसे पैसा मत दो।"

५. मैं बाहर जानेवाला ही था कि बारिश आ गयी।

- 'कि' अव्यय के प्रयोग से वाक्यार्थ में विकल्प का बोध होता है।

जैसे-

ख) १. तुम चाय पिओगे कि काफी?

२. राम आया कि कृष्ण?

- **'की' का प्रयोग :-**
- स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन सूचक संज्ञा शब्दों के संबंध बताने के लिए 'की' का प्रयोग होता है।

ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳ ಏಕವಚನ ಅಥವಾ ಬಹುವಚನಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಾಮಪದಗಳ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತಿಳಿಸುವಾಗ 'की' ಯನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಾರೆ.

जैसे :-

१. भारत की राजधानी
२. शहर की लडकियाँ
३. बेटे की लडकी
४. मोहन की किताबें
५. पिताजी की किताब
६. घर की रोटियाँ
७. आप की बातें

11. विरुध्दार्थक श

- **लिंग (जाति) सूचक**

१. माता x पिता
२. बैल x गाय
३. हाथी x हाथिनी
४. बाप x माँ

- **अन्य विपरीतार्थ शब्द :-**

१. अंधकार x प्रकाश
२. आय x व्यय
३. आगे x पीछे
४. अमृत x विष/मृत

- **उपसर्ग जोडकर विलोम शब्द :-**

१. आधार x निराधार
२. परतंत्र x स्वतंत्र
३. जय x पराजय
४. सफल x विफल/असफल

- **अ या अन से विलोम शब्द :-**

१. आदर x अनादर
२. चल x अचल
३. लिखित x अलिखित
४. आवश्यक x अनावश्यक

- **पाठों के अभ्यास से :-**

बडा x छोटा
प्रसिद्ध x कुख्यात
औपचारिक x अनौपचारिक
आरंभ x समाप्त, अंत
पूर्व x अपूर्व
निकट x दूर
पाप x पुण्य
निराशा x आशा
स्वीकार x अस्वीकार
होश x बेहोश
बढना x घटना
स्थिर x अस्थिर
मुमकिन x नामुमकिन
वरदान x अभिशाप
दुरुपयोग x सदुपयोग
अनुपयुक्त x उपयुक्त
निकट x दूर
दिन x रात
भीतर x बाहर
चढना x उतरना
विश्वास x अविश्वास
प्रिय x अप्रिय
संतोष x असंतोष
स्वस्थता x अस्वस्थता
आदर x अनादर
उपयोगी x अनुपयोगी
उपस्थिति x अनुपस्थिति
उचित x अनुचित
ईमान x बेईमान
होश x बेहोश
खबर x बेखबर
रोजगार x बेरोजगार
पीछे x आगे
खरीदना x बेचना
लेना x देना
आना x जाना
शांति x अशांति
गरीब x अमीर
सुंदर x कुरुप
विदेश x स्वदेश
आदि x अनादि
सजीव x निर्जीव
सदाचार x अनाचार
आयात x निर्यात
आगमन x प्रस्थान
रात x दिन
सवाल x जवाब
बेचना x खरीदना
सज्जन x दुर्जन
जन्म x मरण
आसान x कठिन
गरीब x अमीर
अपना x पराया
छोटे x बडे

12. वचन

- **वचन के भेद :-**
  1. एकवचन
  2. बहुवचन

एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें
बहन	बहनें
पुस्तक	पुस्तकें
सड़क	सड़के
गाय	गायें

बात	बातें

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़े	कौआ	कौए
कुत्ता	कुत्ते	गधा	गधे
केला	केले	बेटा	बेटे

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कन्या	कन्याएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
कला	कलाएँ	माता	माताएँ
कविता	कविताएँ	लता	लताएँ

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बुद्धि	बुद्धियाँ	गति	गतियाँ
कली	कलियाँ	नीति	नीतियाँ
कॉपी	कॉपियाँ	लड़की	लड़कियाँ
थाली	थालियाँ	नारी	नारियाँ

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ	बिटिया	बिटियाँ
चुहिया	चुहियाँ	कुतिया	कुतियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	खटिया	खटियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ	गैया	गैयाँ

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गौ	गौएँ	बहू	बहूएँ
वधू	वधूएँ	वस्तु	वस्तुएँ
धेनु	धेनुएँ	धातु	धातुएँ

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकवृंद	मित्र	मित्रवर्ग
विद्यार्थी	विद्यार्थीगण	सेना	सेनादल
आप	आप लोग	गुरु	गुरुजन
श्रोता	श्रोताजन	गरीब	गरीब लोग

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन

क्षमा	क्षमा	नेता	नेता
जल	जल	प्रेम	प्रेम
गिरि	गिरि	क्रोध	क्रोध
राजा	राजा	पानी	पानी

- **<u>पाठों के अभ्यास से :-</u>**

एकवचन	बहुवचन
परिवार	परिवार
.घर	घर
योजना	योजनाएँ
कविता	कविताएँ
कहानी	कहानियाँ
कला	कलाएँ
लोग	लोग
उपाधि	उपाधियाँ
पत्र	पत्र
उडान	उडानें
आँख	आँखें
रुपया	रुपये
पैसा	पैसे
हाथ	हाथ
रोटी	रोटियाँ
पैसा	पैसे
परदा	परदे
कमरा	कमरे
दायरा	दायरे
ख़बर	ख़बरें
किताब	किताबें
जगह	जगहें
कोशिश	कोशिशें
युग	युग
दोस्त	दोस्त
कंप्यूटर	कंप्यूटर
रिश्तेदार	रिश्तेदार
कपडा	कपडें
चादर	चादर
बात	बातें
डिब्बा	डिब्बें
चीज	चीजें
व्यवस्था	व्यवस्थाएँ
सेवा	सेवाएँ
पक्षी	पज्षियाँ
गाली	गालियाँ
बच्चा	बच्चें
घर	घर

13. पर्यायवाची शब्द

पहाड़ - पर्वत , अचल, भूधर ।
आग- अग्नि,अनल,दहन,ज्वलन,धूमकेतु,कृशानु ।
अमृत-सुधा,अमिय,पियूष,सोम,मधु,अमी।
असुर-दैत्य,दानव,राक्षस,निशाचर,रजनीचर,दनुज।
अश्व - वाजि,घोडा,घोटक,रविपुत्र ,हय,तुरंग .
आम-रसाल,आम्र,सौरभ,मादक,अमृतफल,सहुकार ।
अंहकार - गर्व,अभिमान,दर्प,मद,घमंड।
आँख - लोचन, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि।
आकाश - नभ,गगन,अम्बर,व्योम, अनन्त, आसमान।
आनंद - हर्ष,सुख,आमोद,मोद,प्रमोद,उल्लास।
आश्रम - कुटी ,विहार,मठ,संघ,अखाडा।
आंसू - नेत्रजल,नयनजल,चक्षुजल,अश्रु ।
इंद्र - देवराज,सुरेन्द्र ,सुरपति ,अमरेश ,देवेन्द्र ,वासव ,सुरराज ,सुरेश .
इन्द्राणी - इंद्रवधु,शची,पुलोमजा .
ईश्वर- भगवान,परमेश्वर,जगदीश्वर ,विधाता।
इच्छा - अभिलाषा,चाह,कामना,लालसा,मनोरथ,आकांक्षा।
ओंठ -ओष्ठ,अधर,होठ।
कमल-पद्म,पंकज,नीरज,सरोज,जलज,जलजात ।
कृपा - प्रसाद,करुणा,दया,अनुग्रह।
गाय- गौ,धेनु,सुरभि,भद्रा ,रोहिणी।
गधा - गर्दभ ,खर,धूसर ,शीतलावाहन,चक्रीवान.
चरण -पद,पग,पाँव, पैर ।
चातक - सारन,मेघजीवन ,पपीहा ,स्वातीभक्त .
किताब -पोथी ,ग्रन्थ ,पुस्तक ।
कपड़ा -चीर,वसन, पट ,वस्त्र ,अम्बर ,परिधान ।
कामदेव - मन्मथ ,मनोज,काम,मार ,कंदर्प,अनंग ,मनसिज ,रतिनाथ ,मीनकेतू.
कुबेर - किन्नरपति , किन्नरनरेश ,यक्षराज ,धनाधिप ,धनराज ,धनेश .
किरण -ज्योति, प्रभा,रश्मि, दीप्ति, मरीचि ।

- **पाठों के अभ्यास से :-**

आयु :- उम्र, वय,
विपुल :- बहुत, ज्यादा, प्रचुर, अधिक
स्फूर्ति :- उत्साह, प्रेरणा, जोश
संपदा :- संपत्ति, दौलत, जायदाद, धन
गौरव :- सम्मान, आदर, सत्कार, अभिवादन
हिम्मत :- धैर्य, साहस
पेड :- वृक्ष, झाड
पक्षी :- पंछी, खग
महिला :- स्त्री, नारी
तबीयत :- स्वास्थ्य, आरोग्य, सेहत
पर्वत :- आद्रि, पहाड, गिरी
सागर :- समुद्र, समुंदर, रत्नाकर
आगार:- घर, ठिकाना, जगह
जल :- पानी, नीर, उदिक
आकाश :- आसमान, गगन, नभ

*****

कंठस्थ के लिए पद्य

प्रभो !

१.विमल इंदु की विशाल किरणें
प्रकाशतेरा बता रही हैं
अनादि तेरी अनंत माया
जगत् को लीला दिखा रही है!

२.प्रसार तेरी दया का कितना
देखना हो तो देखे सागर
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे
तरंगमालाएँ गा रही हैं !

३.जो तेरी होवे दया दयानिधि
तो पूर्ण होते सबके मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके
यही तो आशा दिला रही है !

मातृभूमि

४.मातृ-भू,शत-शत बार प्रणाम!
अमरों की जननी,तुमको शत-शत बार प्रणाम !
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम !
तेरे उर में शायित गांधी, बुद्ध और राम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम ।

५.हरे-भरे खेत सुहाने ,
फल-फूलों से युत वन-उपवन,
तेरे अंदर भरा हुआ है
खनिजों का कितना व्यापक धन।
मुक्त-हस्त तू बाँट रही है
सुख-संपत्ति, धन-धाम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम!

६.एक हाथ में न्याय-पताका,
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में,
जग का रूप बदल दे, हे माँ,
कोटि-कोटि हम आज साथ में।
गूँज उठे जय-हिंद नाद से-
सकल नगर और ग्राम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम ।

भावार्थ लिखने के लिए पद्य

तुलसी के दोहे

१.मुखिया मुख सों चाहिए,खान पान को एक।
पालै-पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक।।

भावार्थ:-मुँह खाने-पीने का काम अकेला करता है,परंतु वह जो खाता-पीता है,उससे तन के समस्त अंगों का पालन- पोषण करता है। तुलसीदास के अनुसार समाज के नेता भी इस प्रकार विवेकवान होना चाहिए।

२.जड़ चेतन गुण-दोषमय,विस्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुण गहहिं पय,परिहरि वारि विकार।।

भावार्थ:-सृष्टिकर्ता ने इस जगत को जड़-चेतन और गुण - दोष से मिलाकर बनाया है,लेकिन हंस-सा साधु पानी रूपी विकारों को छोड़कर दूध रूपी अच्छे गुणों को अपनाते हैं।

३.दया धर्म का मूल है,पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँडिये, जब लग घट में प्राण।।

भावार्थ:-दया धर्म का मूल है और अभिमान पाप का। कवि कहते हैं कि जब तक शरीर में प्राण रहते हैं तब तक अभिमान छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए।

४.तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसो एक।।

भावार्थ:-मनुष्य पर जब विपत्ति पड़ती है तब विद्या, विनय तथा विवेक ही उसका साथ निभाते हैं। जो राम पर भरोसा करता है, वह साहसी, सत्यव्रती और सुकृतवान बनता है।

५.राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसी उजियार।।

भावार्थ:-जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा आँगन में प्रकाश फलता है, उसी तरह राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है।